01

पुष्प की अभिलाषा

कवि माखनलाल चतुर्वेदी

रचनाकार का परिचय : राष्ट्रीय धारा के कवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1889 ई. में मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई गाँव में हुआ था। उनके पिता श्री नन्दलाल चतुर्वेदी थे। आपको उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिल सका। स्वाध्याय द्वारा आपने संस्कृत, अंग्रेजी, गुजराती, बंगला आदि का ज्ञान प्राप्त किया। भारत सरकार ने पद्म भूषण की उपाधि से सुशोभित किया। इनका देहावसान 30 जनवरी, सन् 1968 को हो गया।

साहित्यिक परिचय : माखनलाल चतुर्वेदी कुशल पत्रकार तथा राष्ट्रीय विचारधारा के सफल कवि थे। साहित्य क्षेत्र में आप एक भारतीय आत्मा के उपनाम से प्रसिद्ध हैं। इन्होंने कविता, कहानी, नाटक, निबन्ध, संस्मरण आदि विधाओं पर लिखा। पत्रकार और साहित्यकार के रूप में इन्होंने देशप्रेम तथा त्याग बलिदान की प्रेरणा दी है। उनकी रचनाओं में करुणा की पुकार, क्रान्ति का ओज, राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव मिलता है। रचनाएँ हिमकिरीटिनी, हिमतरंगिनी, युगचरण, समर्पण, माता, वेणु लो गूँजे धरा (काव्य), साहित्य के देवता (गद्य–काव्य), चिन्तक की लाचारी, आत्मदीक्षा (भाषण), कृष्णार्जुन युद्ध (नाटक), वनवासी, कला का अनुवाद (कहानी) आदि चतुर्वेदी की प्रमुख रचनाएँ हैं।

अधिगम प्रतिफल :

❖ हम देश प्रेम की भावना से परिचित होते हैं। देश के आन–बान शान के खातिर अपना तन–मन–धन समर्पित करने वाले देशभक्त वीरों के प्रति सम्मान और श्रद्धाभाव से परिचित होते हैं।

पाठ का परिचय– प्रस्तुत कविता में कवि ने पुष्प के माध्यम से देश प्रेम की भावना को दर्शाया है। मनुष्य पुष्प का उपयोग अपने मनोभावों व मनोदशाओं के आधार पर करता है किंतु पुष्प की अपनी क्या इच्छा है ? उसकी इच्छा को कवि ने पुष्प की अभिलाषा कविता में प्रस्तुत किया है।

सार–संक्षेप

इस कविता में पुष्प की इच्छा देवताओं के गहनों में गूंथे जाने या फिर प्रेमी की प्रेममाला में बंधने की या फिर सम्राटों के शव पर या ईश्वर के सिर पर चढ़ाए जाने की नहीं है, उसकी एकमात्र इच्छा है

© JCERT not to be republished

कि माली उसे तोड़कर उस पथ पर फेंक दे जिस पथ पर चलकर वीर अपना तन–मन–धन अपनी मातृभूमि के आन–बान–शान के लिए कुर्बान कर देता है, तभी पुष्प की अभिलाषा (उत्कट इच्छा) पूरी होगी।

पद्यांश की व्याख्या–1

पंक्ति

चाह नहीं, मैं सुरबाला के,

गहनों में गूंथा जाऊँ।

चाह नहीं, प्रेमी–माला में

बिंध प्यारी को ललचाऊँ।

शब्दार्थ –

सुरबाला– अप्सरा (देवकन्या),

गूंथा– धागा में पिरोया गया

बिध–बंधकर।

व्याख्या –

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि पुष्प की इच्छा को अभिव्यक्त करते हुए कहता है कि पुष्प की चाह यह नहीं है कि वह अप्सरा के अथवा सुंदर स्त्री के गहनों में गूँथा जाए या फिर वह प्रेमी जोड़ो की प्रेम की माला में बँध कर प्रेमी–प्रेमिका को ललचाए।

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों को भरें।

क. चाह नहीं मैं __________ के,

ख. __________ गूंथा जाऊँ।

ग. बिंध प्यारी को __________

© JCERT not to be republished

प्रश्न 2. सही या गलत का निशान लगाएं।

क. पुष्प सुरबाला के गहनों में गूँथना चाहती है।

ख. पुष्प को प्रेमी माला में बँधने की चाह नहीं है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें।

प्रश्न 3. गहनों में गूँथने की चाह किसे नहीं है?

प्रश्न 4. किसके गहनों में गूंथने की चाह पुष्प की नहीं है?

प्रश्न 5. किस माला में पुष्प बँधना नहीं चाहता?

प्रश्न 6. पुष्प किसे ललचाना नहीं चाहता?

पद्यांश की व्याख्या–2

चाह नहीं, सम्राटों के शव पर,
है हरि डाला जाऊँ।
चाह नहीं,
देवों के सिर पर चढ़ूँ
भाग्य पर इठलाऊँ।।

शब्दार्थ –

सम्राटों– राजा–महाराजाओं, शव–लाश, हरि–ईश्वर, इठलाऊँ– इतराउ

व्याख्या –

पंक्तियों में कभी कहता है कि पुष्प की इच्छा यह भी नहीं है कि उसे राजा–महाराजाओं के शव पर चढ़ाया जाए या फिर ईश्वर के सिर पर चढ़कर वह अपने भाग्य पर इतराए।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 7. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो पर्यायवाची लिखिए–

8. रिक्त स्थानों को भरें

क. चाह नहीं, __________ के शव पर,

ख. हे हरि डाला__________चाह नहीं,

ग. __________ सिर पर चढ़ूँ

घ. भाग्य पर __________

प्रश्न 9. सही या गलत का निशान लगाएं।

क. पुष्प राजा–महाराजाओं के शव पर चढ़ाए जाने की इच्छा रखता है।

ख. पुष्प की चाह ईश्वर के सिर पर चढ़ाए जाने की नहीं है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें।

प्रश्न 10. पुष्प की इच्छा किस के शव पर डाले जाने की नहीं है ?

प्रश्न 11. पुष्प किसके सिर पर चढ़ना नहीं चाहता?

पद्यांश की व्याख्या–3

मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएं वीर अनेक

शब्दार्थ –

मातृभूमि – अपना देश

पथ – रास्ता

शीश – सिर

© JCERT not to be republished

व्याख्या –

कवि कहता है कि पुष्प वनमाली से अपने मन की इच्छा व्यक्त करते हुए कहता है कि तुम मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक देना जिस राह पर चलकर मातृभूमि की रक्षा के लिए वीर पुरुष गुजरते हैं, तभी मेरा जीवन सार्थक होगा और मैं स्वयं पर गर्व कर सकूँगा।

12. रिक्त स्थानों को भरें :

क. मुझे तोड़ लेना __________

ख. उस __________ पर तुम देना फेंक

ग. __________पर शीश चढ़ाने,

घ. जिस पथ जाएं __________ अनेक।

प्रश्न 13. सही या गलत का निशान लगाएं।

क. पुष्प देवों के सिर पर चढने की प्रार्थना करता है।

ख. पुष्प मातृभूमि की रक्षा करने के लिए जाने वाले वीरों के रास्ते में फेंक देने की इच्छा करता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें।

प्रश्न 14 पुष्प किसके पथ पर बिछना चाहता है?

प्रश्न 15. पुष्प किससे तोड़ने की बात कह रहा है?

प्रश्न 16. बहु वैकल्पिक प्रश्नों के सही विकल्प का चुनाव करें

क. पुष्प किसके गहनों में गूंथना नहीं चाहती ?

A. मधुबाला के

B. सुरबाला के

C. मुरली वाला के

D. बाँसुरी वाला के

© JCERT not to be republished

ख. 'बिंध' का अर्थ है–

A. भीगना

B. भीड़ना

C. बंधना

D. भेदना

ग. पुष्प किस के शव पर चढ़ना नहीं चाहता?

A. मानव के

B. दानव के

C. सम्राटों के

D. देवताओं के

घ. पुष्प की अभिलाषा कविता में हरि का अर्थ क्या है?

A. हारना

B. हरा हो जाना

C. ईश्वर

D. हरियाली

ङ. पुष्प किससे तोड़ने के लिए पुकार रहा है?

A. ईश्वर से

B. वनमाली से

C. वनवासी से

D. वीरों से

© JCERT not to be republished

च. वीर अपना शीश किस की रक्षा हेतु चढ़ाते हैं?

A. घर की

B. समाज की

C. जाति की

D. मातृभूमि की

उत्तर 1. क. सुरबाला ख. गहनों में ग. ललचाऊँ।

उत्तर 2. क. गलत ख. सही

उत्तर 3. गहनों में गूंथने की चाह पुष्प को नहीं है।

उत्तर 4. सुरबाला के गहनों में गूँथने की चाह पुष्प की नहीं है।

उत्तर 5, प्रेमी माला में पुष्प बँधना नहीं चाहता।

उत्तर 6. पुष्प प्रेमी को ललचाना नहीं चाहता।

उत्तर 7. क. पुष्प–फूल, सुमन ख. भगवान–ईश्वर, देवता

उत्तर 8. क. सम्राटों ख. जाऊँ ग. देवों के घ. इठलाऊँ।।

उत्तर 9. क.गलत ख. सही

उत्तर 10. पुष्प की इच्छा सम्राटों के शव पर डाले जाने की नहीं है।

उत्तर 11. पुष्प देवों के सिर पर चढ़ना नहीं चाहता।

उत्तर 12.क. वनमाली ख.पथ ग. मातृभूमि घ. वीर

उत्तर 13. क. गलत ख.सही

उत्तर 14. पुष्प मातृभूमि की रक्षा के लिए जाते हुए वीर पुरुष के पथ पर बिछना चाहता है।

उत्तर 15. पुष्प वनमाली से तोड़ने की बात कह रहा है।

© JCERT not to be republished

उत्तर 16.

क –B– सुरबाला के।

ख –C– बँधना।

ग –C– सम्राटों के।

घ –C– ईश्वर।

ङ. –B– वनमाली से।

च –D– मातृभूमि की।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

'प्रश्न 1. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में पुष्प के द्वारा क्या अभिलाषा व्यक्त की गई है?

उत्तर 1. पुष्प की अभिलाषा कविता में पुष्प के द्वारा यह अभिलाषा व्यक्त की गयी है कि वनमाली उसे तोड़कर उस राह में फेंक दे जिस राह पर चलकर अपने मातृभूमि की रक्षा के लिए वीरों की टोली अपना तन–मन–धन सब अर्पित कर देती है।

प्रश्न 2. 'मातृभूमि' से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर 2. मातृभूमि से तात्पर्य उस भूमि से हैं जिस भूमि पर हम जन्म लेते हैं, जिसका अन्न जल ग्रहण कर अपने जीवन की रक्षा करते हैं और जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने जीवन की सभी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते हैं अर्थात जिस भूमि पर हम जन्म लेते है, जो हमारा लालन–पालन माँ के सामान करती है वह हमारी मातृभूमि कहलाती है।

प्रश्न 3. कविता में पुष्प किन–किन चीजों की चाह नहीं करता ?

उत्तर 3. पुष्प की चाह यह नहीं है कि वह अप्सरा के अथवा सुंदर स्त्री के गहनों में गूँथा जाए या फिर यह कि प्रेमी जोड़ो की प्रेम की माला में बँध कर प्रेमी–प्रेमिका को ललचाए। पुष्प की इच्छा यह भी नहीं है कि उसे राजा महाराजाओं के शव पर चढ़ाया जाए या फिर ईश्वर के सिर पर चढ़कर वह अपने भाग्य पर इतराए।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 4.

''मुझे तोड़ लेना वनमाली,

उस पथ पर तुम देना फेंक मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,

जिस पथ जाएं वीर अनेक।

इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए?

उत्तर 4. पुष्प वनमाली से अपने मन की इच्छा व्यक्त करते हुए कहता है कि तुम मुझे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक देना जिस राह पर चलकर मातृभूमि की रक्षा के लिए वीर पुरुष गुजरते हैं, तभी मेरा जीवन सार्थक होगा और मैं स्वयं पर गर्व कर सकूँगा।

प्रश्न 5. देवों के सिर पर चढ़कर अपने भाग्य पर इठलाने से पुष्प क्यों बचाना चाहता है?

उत्तर 5. मातृभूमि की रक्षा से बड़ा कोई धर्म नहीं है इसलिए पुष्प चाहता है कि उसे तोड़कर उस रास्ते पर फेंक दिया जाय जिस राह पर चलकर मातृभूमि की रक्षा के लिए वीर पुरुष गुजरते हैं, तभी जीवन सार्थक होगा और वह स्वयं पर गर्व कर सकेगा अतएव पुष्प को देवों के सिर पर चढ़कर अपने भाग्य पर इठलाने की अपेक्षा वीरों के पैरों के नीचे कुचला जाना मंजूर है, उसे मान सम्मान की चाह, कदापि नहीं है।

भाषा संदर्भ

1. इस पाठ में अनेक सामासिक पद आए हैं। सामासिक पदों के प्रयोग से भाषा संक्षिप्त एवं सटीक बनती है। उदाहरण के लिए, वन का माली के स्थान पर वनमाली का प्रयोग किया जा सकता है। इससे स्पष्ट है कि दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने पर सामासिक पद का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया में दो पदों के बीच आने वाले कारक चिह्न (विभक्तियों/परसर्गों) इत्यादि का लोप होने से दोनों पद पास आ जाते हैं।

   समास रचना में प्रायः दो पद होते हैं। पहले पद को 'पूर्व पद' और दूसरे पद को 'उत्तर पद' कहते हैं और समास से बने पद को समस्त पद। समस्त पद के अंगों को अलग करने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं। विग्रह करने पर लुप्त पद (शब्द) पुनः दिखाई देते हैं। जैसे वनमाली एक समस्त पद है। इसमें वन पूर्व पद और माली उत्तर पद। इसका विग्रह है वन का माली। यहाँ परसर्ग का लुप्त है जो विग्रह के बाद पुनः दिखाई दे रहा है। पाठ में आए सामासिक पदों को ढूँढिए एवं उनका विग्रह कीजिए।

   उत्तरः–क प्रेमी–माला = प्रेमी की माला

© JCERT not to be republished

इसमें प्रेमी पूर्व पद और माला उत्तर पद इसका विग्रह है प्रेमी की माला यहाँ परसर्ग 'की' लुप्त है जो विग्रह के बाद पुनः दिखाई दे रहा है।

ख. मातृभूमि = माता की भूमि

इसमें 'माता' पूर्व पद और 'भूमि' उत्तर पद इसका विग्रह है – माता की भूमि। यहाँ परसर्ग 'की' लुप्त है जो विग्रह के बाद पुनः दिखाई दे रहा है।

2. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए

शीश–सिर

मातृ–माता

पुष्प–फूल

भाग्य–भाग

© JCERT not to be republished